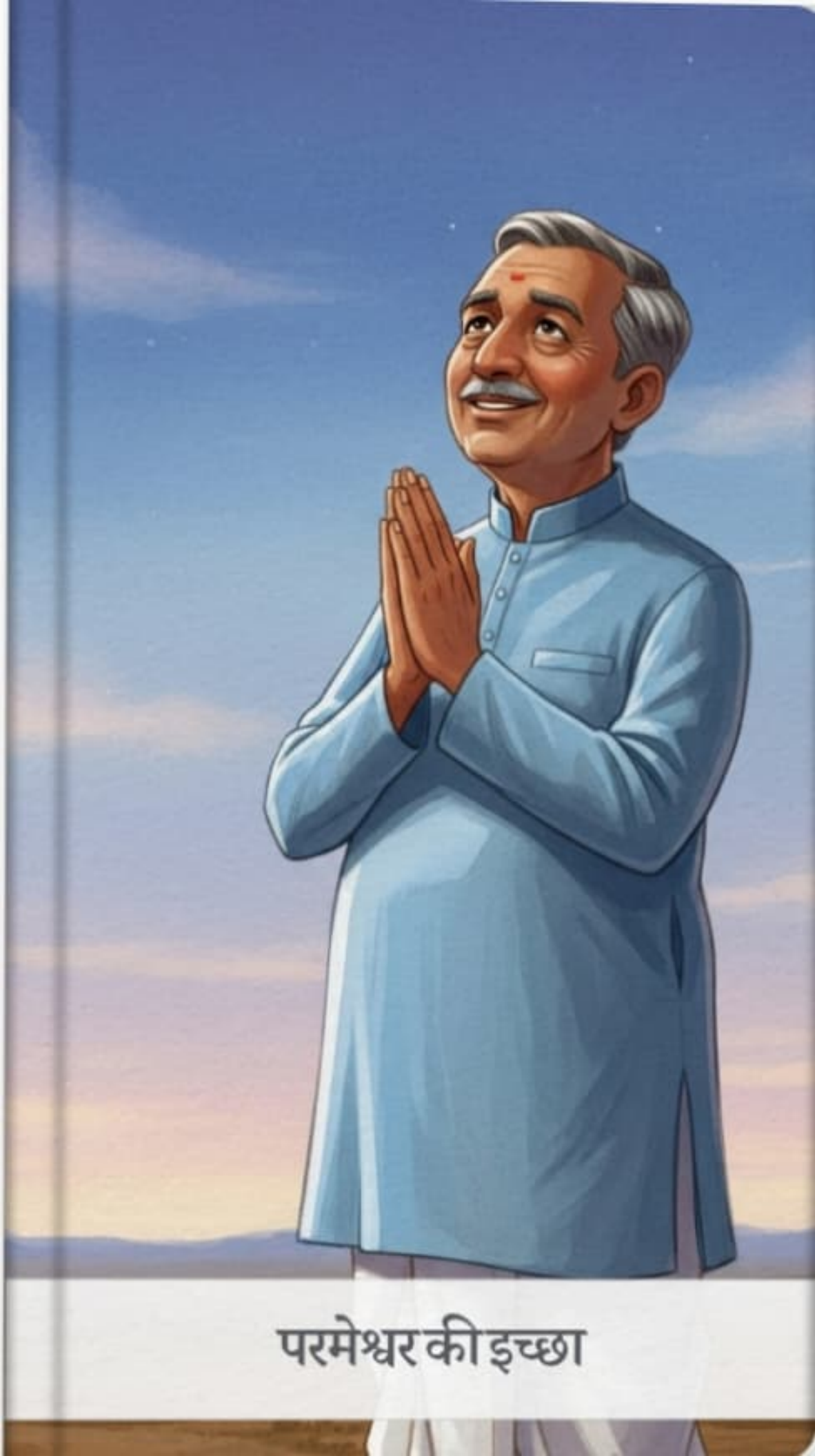

परमेश्वर की इच्छा

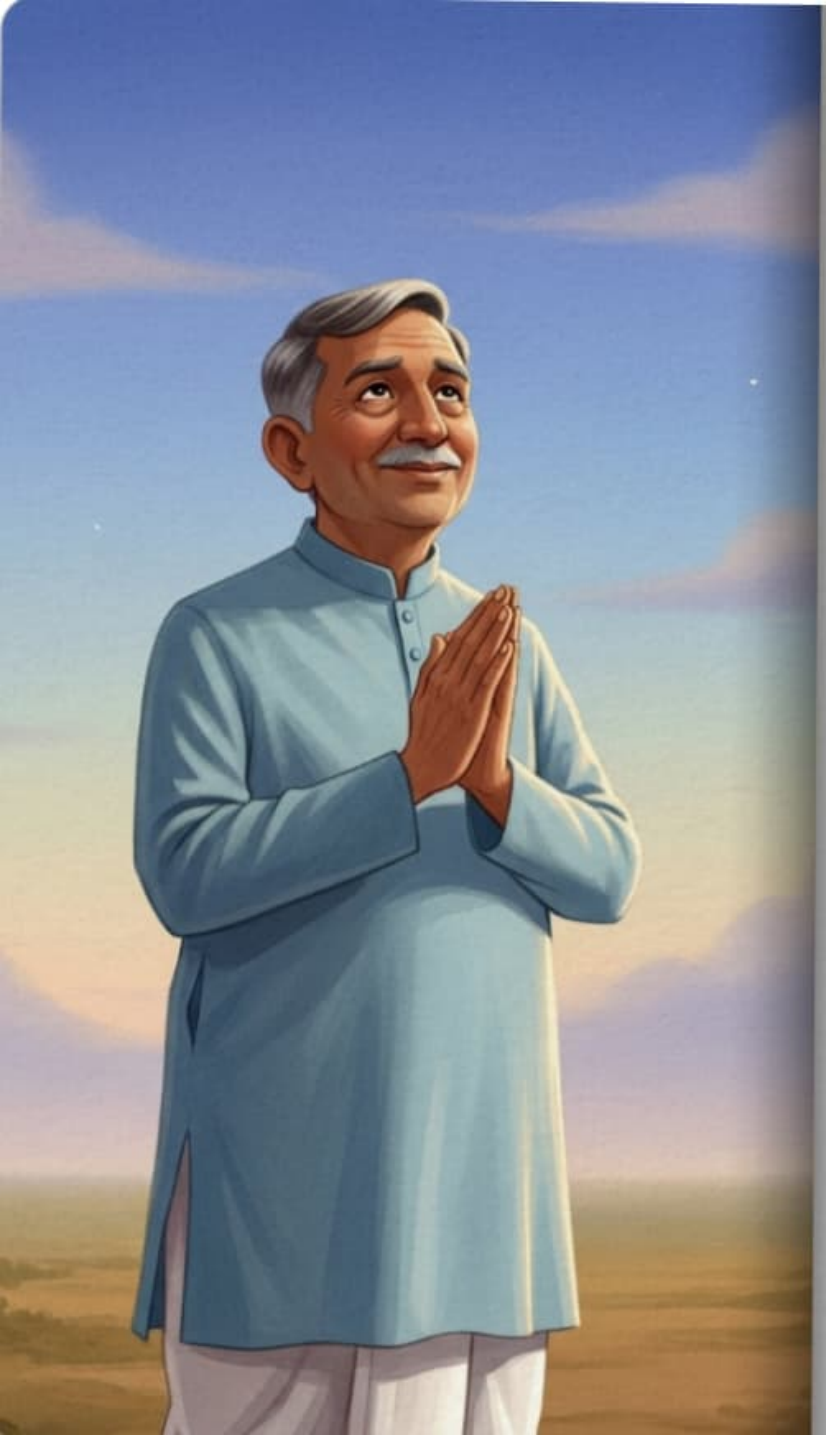

क्या आप अपने, स्वयं के जीवन में, परमेश्वर की इच्छा, पूरी करने को तत्पर हैं? या फिर, परमेश्वर को घूस देने की कोशिश करते हैं? क्या कभी आपने ऐसी प्रार्थना की है कि, "परमेश्वर मुझे यह दे दो, तो मैं, आपको पूजा करूँगा?"

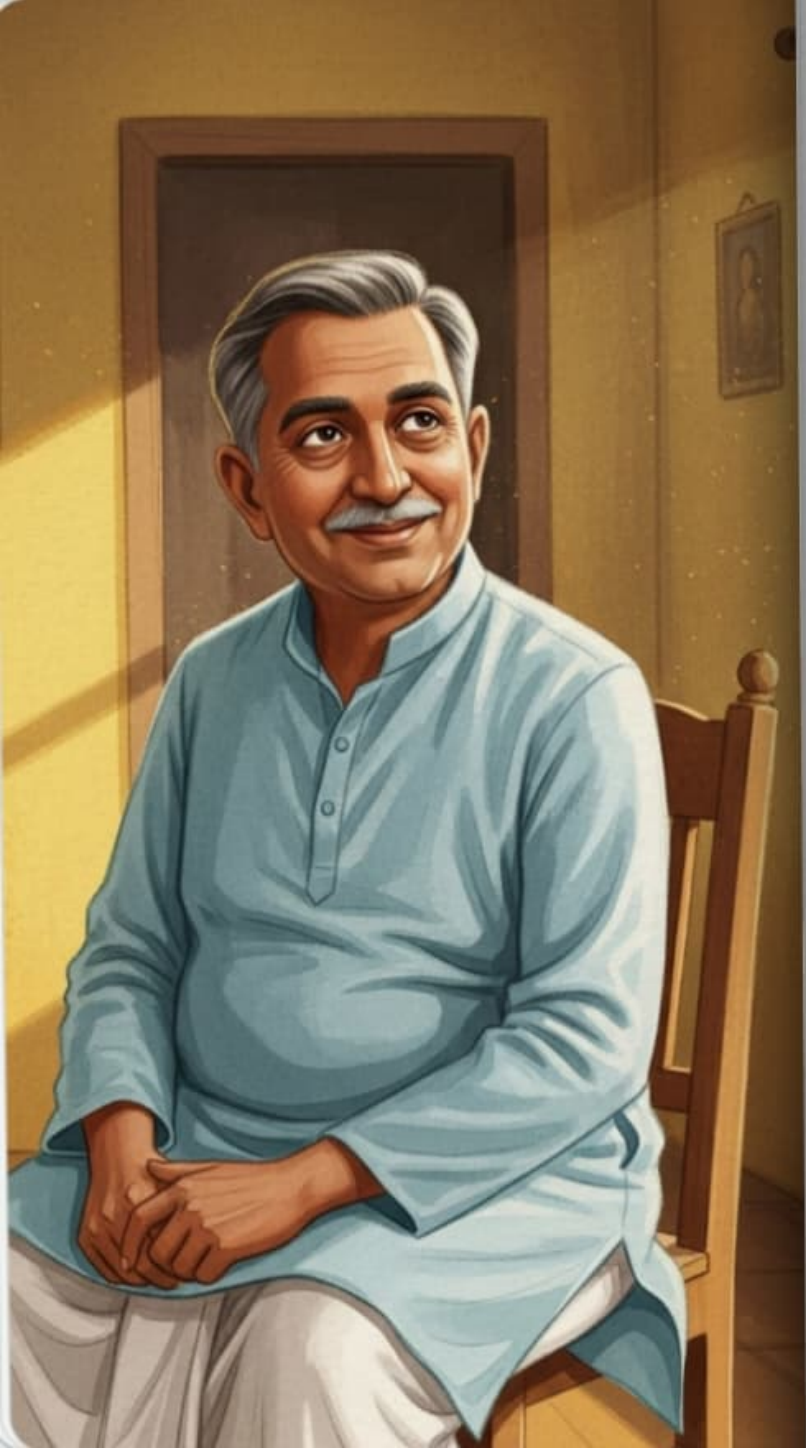

यह कहानी है एक प्यारे पिता, देवराज,
और उनकी दो बेटियों, पुष्पा और
मृदुला की। पिता अपनी दोनों बेटियों
की शादी करना चाहते थे।

एक बेटी, पुष्पा, की शादी एक माली से हुई, जो फूलों की खेती करता था। दूसरी बेटी, मृदुला, की शादी एक कुम्हार से हुई, जो मिट्टी के सुंदर बर्तन बनाता था।

कुछ साल बीत गए, और पिता अपनी
बेटियों से मिलने उनके घरों पर गए।
सबसे पहले, वह अपनी माली बेटी,
पुष्पा, के घर पहुँचे।

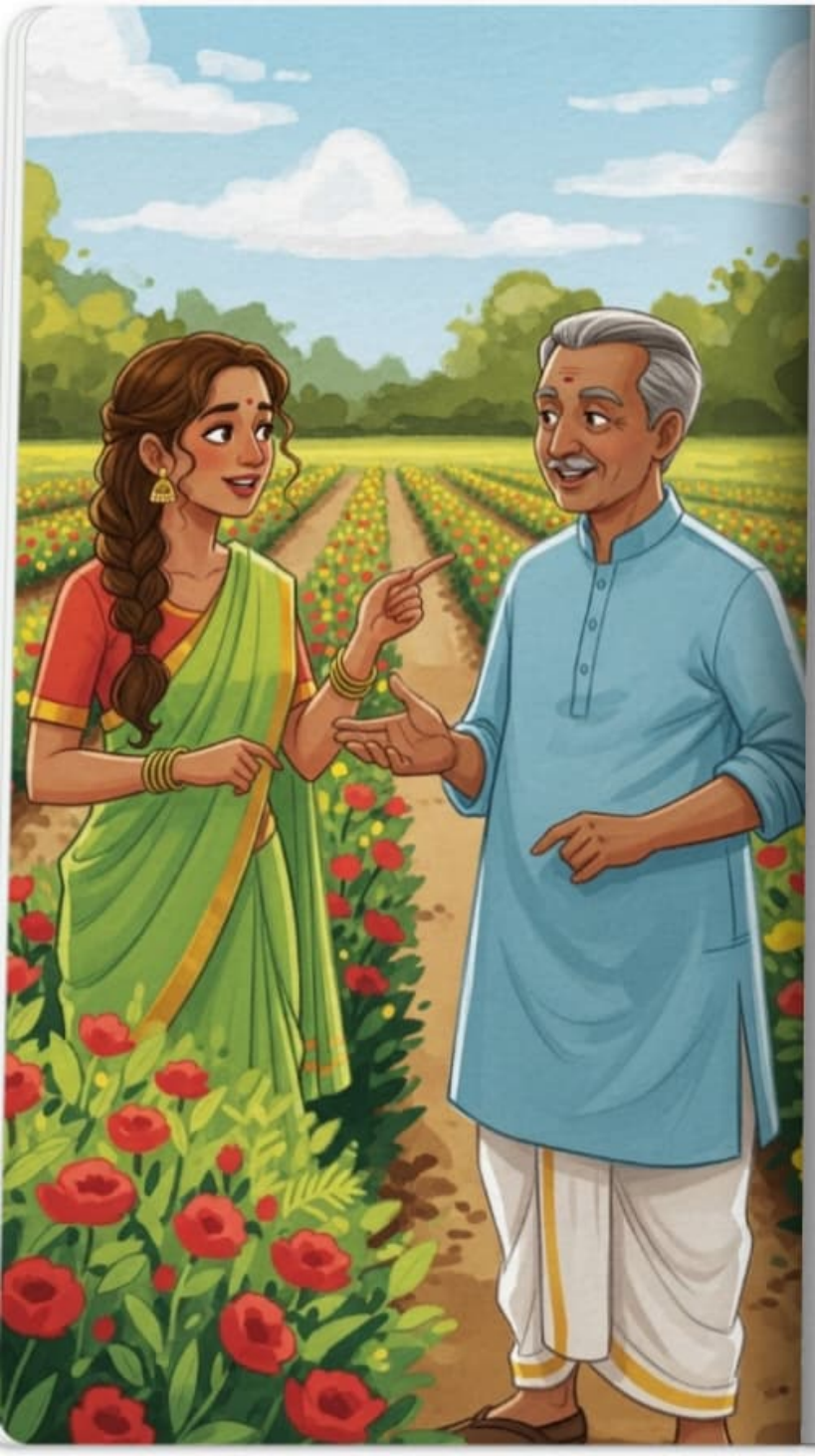

माली बेटी, पुष्पा, ने अपने पिता का स्वागत किया और कहा, "पिताजी, आप परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि बहुत तेज़ बारिश हो, ताकि मेरी फूलों की खेती अच्छी हो और फूल खूब खिलें!"

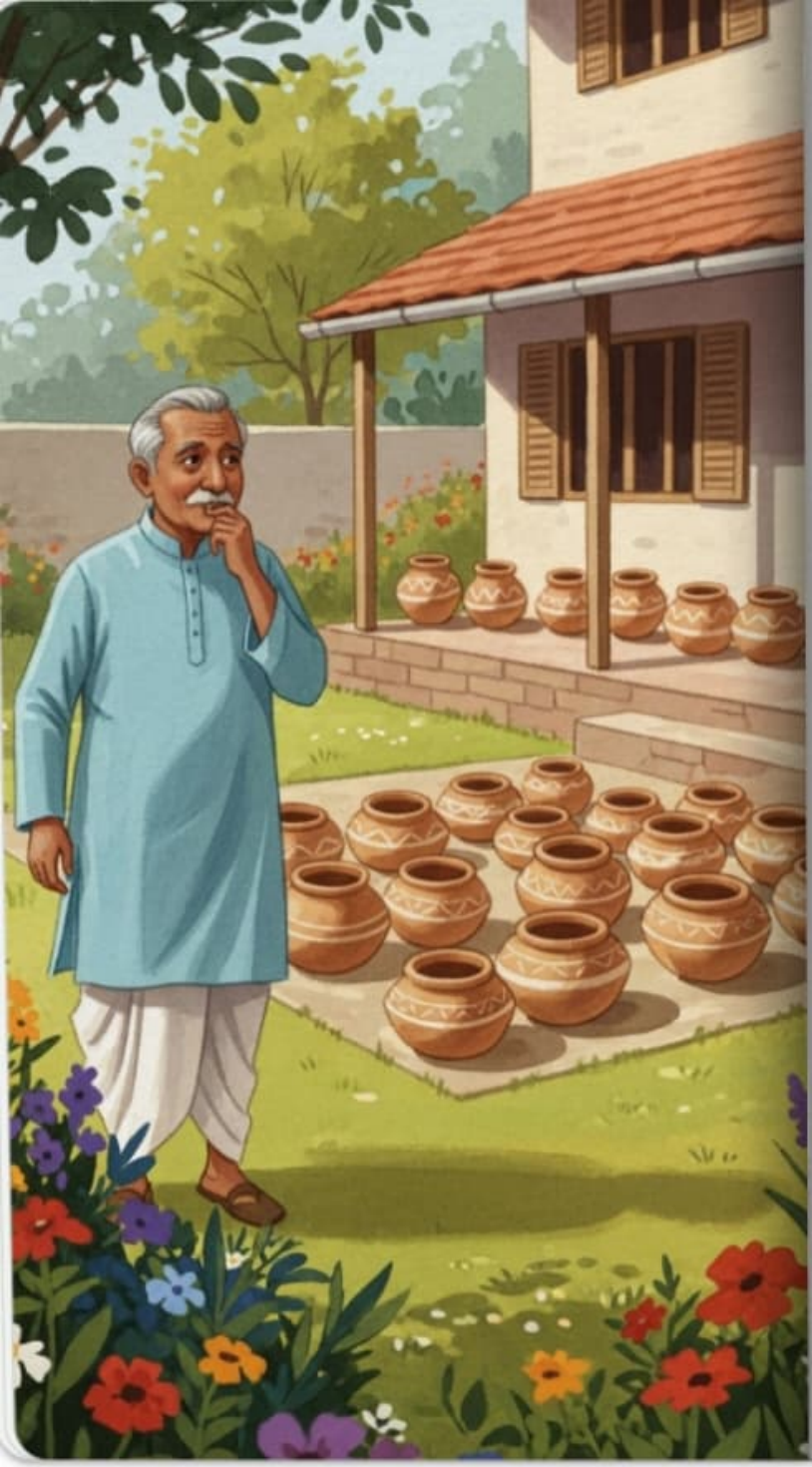

फिर पिता अपनी दूसरी बेटी, मृदुला,
के पास गए, जो कुम्हार की पत्नी थी।
मृदुला ने अपने बनाए मिट्टी के बर्तन
सूखने के लिए बाहर रखे थे।

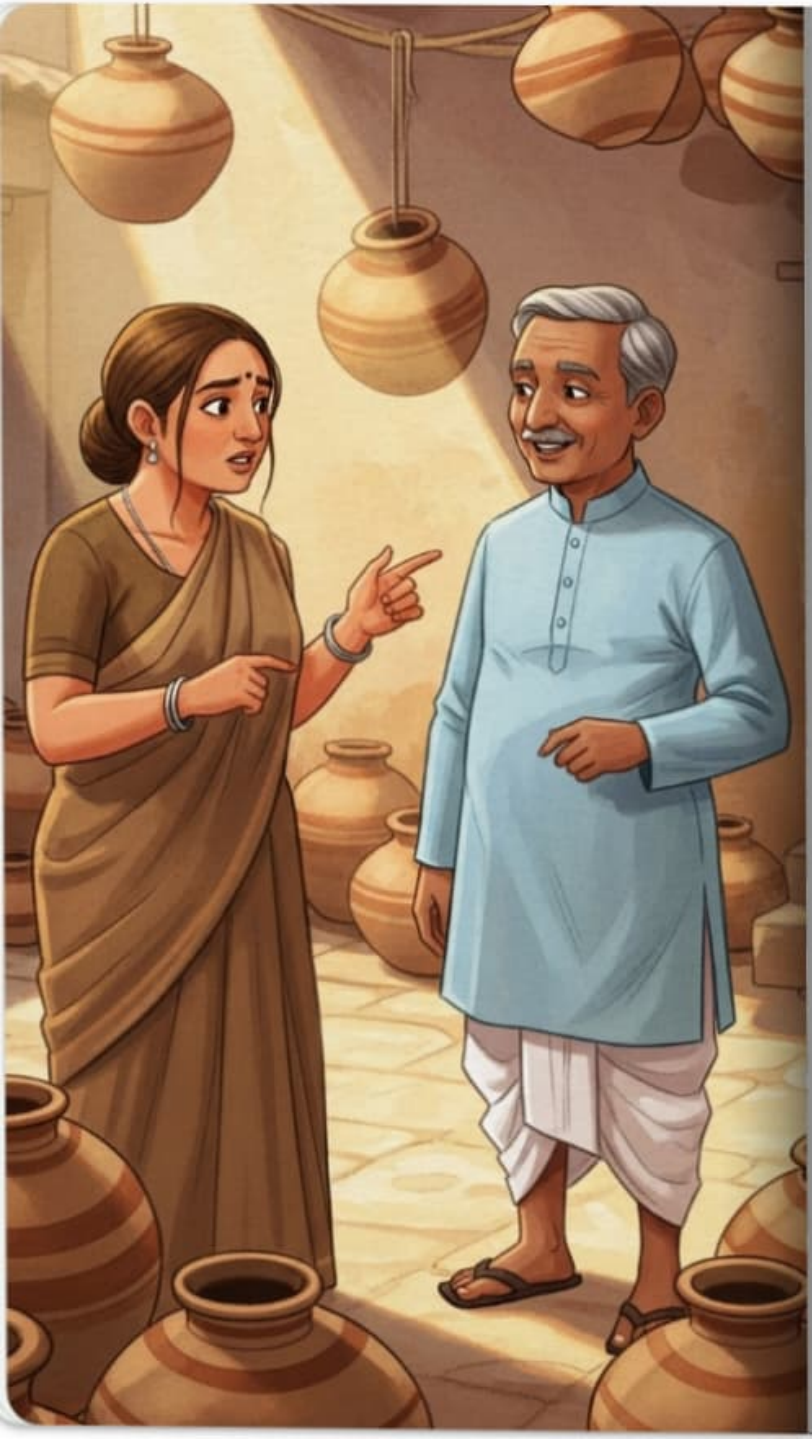

मृदुला ने अपने पिता से कहा,
"पिताजी, आप परमेश्वर से प्रार्थना
कीजिए कि बारिश न हो और बहुत तेज़
धूप हो, ताकि मेरे मिट्टी के बर्तन अच्छी
तरह से सूख जाएँ और मज़बूत बनें!"

अब आप बताइए, पिता को कौन सी
बेटी के लिए प्रार्थना करनी चाहिए?
क्या माली बेटी के लिए, जो बारिश
चाहती है, या फिर कुम्हार बेटी के लिए,
जो धूप चाहती है?

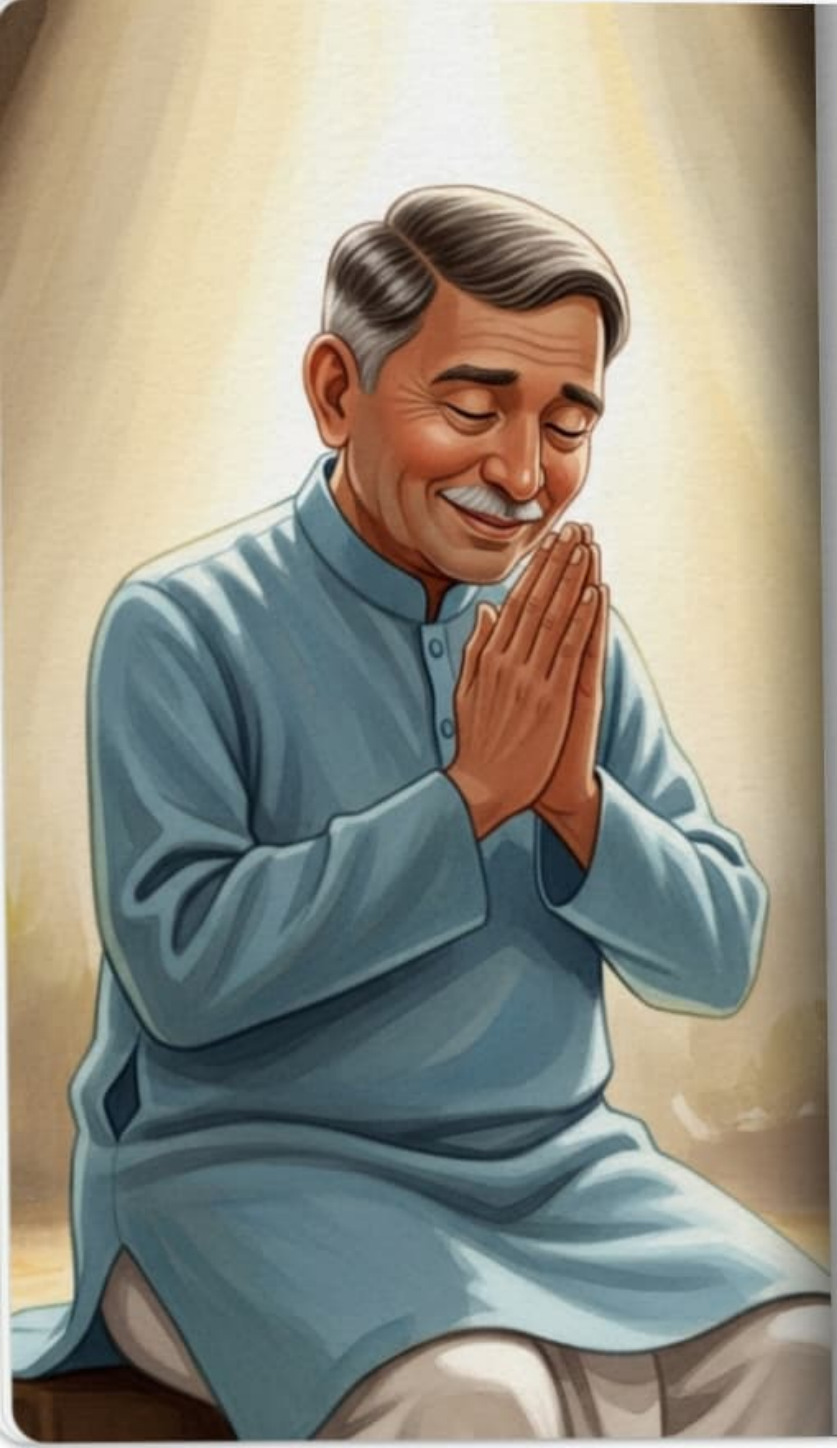

पिता ने गहरी साँस ली और प्रार्थना की, "हे परमेश्वर पिता, तेरी इच्छा पूरी हो।" उन्होंने परमेश्वर की इच्छा पर भरोसा रखा, क्योंकि उन्हें पता था कि परमेश्वर सब जानते हैं।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें परमेश्वर की इच्छा का आदर करना चाहिए और प्रार्थना में हमेशा परमेश्वर की इच्छा को माँगना चाहिए। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, चाहे जीवन में कोई भी परिस्थिति हो। हमारा प्रभु, यीशु मसीह भी, हमें यही सिखाया है कि हम परमेश्वर के आज्ञाकारी बनें, और उसकी इच्छा को पूरी करें।

Start over